IH 4312

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता

उपन्यास

(चारो भाग)

बाबू देवकीनन्दन खत्री

रचित

लहरी बुक डिपो

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

काशी

सस्ता संस्करण] [Price 1/8/-

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है)

साधारण संस्करण

मूल्य Price 1/8/-

भूमिका

[प्रथम संस्करण से]

आज हिन्दी के बहुत से उपन्यास हुए हैं जिनमें कई तरह की बातें वो राजनीति भी लिखी गई है, राजदर्बार के तरीके वो सामान भी जाहिर किए गये हैं, मगर राजदर्बारों में ऐयार (चालाक) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफन-मौला याने सूरत बदलना, बहुत सी दवाओं का जानना, गाना बजाना, दौड़ना, शस्त्र चलाना, जासूसों का काम देना, वगैरह बहुत सी बातें जाना करते थे। जब राजाओं में लड़ाई होती थी तो ये लोग अपनी चालाकी से बिना खून गिराये वो पल-टनों की जानें गँवाये लड़ाई खतम कर देते थे। इन लोगों की बड़ी कदर की जाती थी। इन्हीं ऐयारी पेशे में आज कल बहु-रूपिये दिखाई देते हैं। वे सब गुण तो इन लोगों में रहे नहीं सिर्फ शक्ल बदलना रह गया वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में अभी तक मेरी नजरों से नहीं गुजरा। अगर हिन्दी पढ़ने वाले इस मजे को देख लें तो कई बातों का फायदा हो! सबसे ज्यादे फायदा तो यह है कि ऐसी किताबों को पढ़ने वाला जल्दी किसी के धोखे में न पड़ेगा। इन सब बातों का खयाल करके मैंने यह 'चन्द्रकान्ता' नामक उपन्यास लिखा। इस किताब में नौगढ़ वो विजयगढ़

दो पहाड़ी राजवाड़ों का हाल कहा गया है। इन दोनों राजवाड़ों में पहिले आपुस का खूब मेल रहना, फिर वजीर के लड़के की बदमाशी से बिगाड़ होना, नौगढ़ के कुमार बीरेन्द्रसिंह का विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता पर आशिक होकर तकलीफें उठाना, विजयगढ़ के दीवान के लड़के क्रूरसिंह का महाराज जयसिंह से बिगड़ कर चुनार जाना और चन्द्रकान्ता की तारीफ करके वहाँ के राजा शिवदत्तसिंह को उभाड़ लाना वगैरह। इस बीच में ऐयारी भी अच्छी तरह से दिखलाई गई है और ये राज्य पहाड़ी होने से इसमें पहाड़ी नदियों दर्रों भयानक जंगलों और खूबसूरत वो दिलचस्प घाटियों का भी बयान अच्छी तरह से आया है।

मैंने आज तक कोई किताब नहीं लिखी है, यह पहिला श्रीगणेश है, इसलिए इसमें किसी तरह की गलती या भूल का हो जाना ताज्जुब नहीं जिसके लिए मैं आप लोगों से क्षमा माँगता हूँ, बल्कि बड़ी मेहरबानी होगी अगर आप लोग मेरी भूल को पत्र द्वारा मुझ पर जाहिर करेंगे क्योंकि यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है आगे और छप रहा है, भूल मालूम हो जाने से दूसरी जिल्दों में उसका खयाल किया जायगा।

[आषाढ़ सम्वत् '९४४]

देवकीनन्दन खत्री

बाबू देवकीनन्दन खत्री की संक्षिप्त जीवनी

मूल लेखक बा० श्यामसुन्दरदास

संशोधक—डा० गिरीशचन्द्र त्रिपाठी, एम०ए०, पी-एच० डी

मुल्तान के दीवान और ताल्लुकेदार लाला नौनिद्धिराय बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। मुसलमानों के समय में वे मुल्तान के गवर्नर बनाये गये थे। दीवान शब्द से उस समय अभिप्राय आधुनिक राज्यपाल का ही होता था।

राजा रणजीतसिंह के समय में आपके वंश के लाला राघोमलजी सपरिवार लाहौर आ बसे। आप दीवान नौनिद्धिराय की आठवीं पीढ़ी में थे। राजा रणजीतसिंह के पुत्र शेरसिंह के समय में जब लाहौर में एक प्रकार की अराजकता सी फैल गई थी उस समय इनके पुत्र लाला अचरजमलजी के दो पुत्र (अर्थात् लाला राघोमलजी के पौत्र) लाला नन्दलालजी तथा लाला ईश्वरदासजी लाहौर छोड़ कर काशी चले आये।

लाला अचरजमलजी के पाँच पुत्र थे। लाला नन्दलालजी और लाला ईश्वरदासजी की सन्तति आगे चली, परन्तु लाला लालचन्द, लाला रामदास, और लाला कन्हैयालाल निःसन्तान थे।

लाला नन्दलालजी के तीन लड़के हुए—बाबू देवीप्रसाद, बाबू भगवानदास, और बाबू नारायणदास, और लाला ईश्वरदासजी के केवल एक—हमारे चरित्र-नायक बाबू देवकीनन्दन खत्री।

लाला ईश्वरदासजी की मृत्यु सन् १९०७ ई० में बहत्तर वर्ष की आयु में काशी में हुई।

खत्रीजी का जन्म संवत् १६१८ आषाढ़ कृष्ण सप्तमी शनिवार को मुजफ्फरपुर में हुआ। आपकी माता पूसा (मुजफ्फरपुर) के रईस बाबू जीवनलाल महथा की पुत्री थीं। विवाह के उपरान्त खत्रीजी के पिता लाला ईश्वरदासजी कुछ वर्ष तक पूसा और मुजफ्फरपुर में ही रहे और इसके पश्चात् काशी चले आये।

बा० देवकीनन्दनजी के बाल्यकाल के अधिकांश क्षण मुजफ्फरपुर में ही व्यतीत हुए और कुछ होश सम्हलने बाद आप पिता के पास काशी आये। बाल्यकाल में आपने ननिहाल में फारसी तथा उर्दू के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की। काशी आने पर आपने हिन्दी, अंगरेजी तथा संस्कृत का अध्ययन किया।

गया जिला के टिकारी राज्य में खत्रीजी के पिता का व्यापारिक सम्बन्ध था इसी कारण आपने गया में एक कोठी खोली। गयाजी की कोठी में खत्रीजी स्वतंत्र प्रबन्धक थे, वहाँ आपकी अच्छी आय भी थी।

खत्रीजी बड़े मौजी व्यक्ति थे। गयाजी में आपने पाँच हजार रुपये की केवल गुड्डी उड़ा डाली थी।

एक तो रुपया पास, दूसरे युवावस्था, तीसरे स्वतन्त्रता, तीनों ने अपना चमत्कार दिखाया और अपने पात्र से मनमाना नाच नचाया। कुछ दिन पीछे जब टिकारी राज्य में नाबालगी के कारण सरकारी प्रबन्ध हो गया और इनका उस राज्य से सम्बन्ध टूट गया तब ये काशी चले आये। उस समय इनकी अवस्था चौबीस वर्ष की थी।

टिकारी राज्य में बनारस के राजा ईश्वरीप्रसादनारायणसिंह की बहिन ब्याही थीं, इसी से यह बनारस में उक्त महाराज के कृपापात्र हुए। इन्होंने मुसाहिब बनकर दरबार में रहना तो पसन्द न किया परन्तु चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका ले लिया। इन जंगलों से लाह, लकड़ी, शहद, गोंद तथा और पैदावारों द्वारा अच्छी खासी आमदनी होती थी, और इसी के कारण आपको इन सब जगहों में घूमते फिरते

भी रहना पड़ता था। इसी अवस्था में इन्होंने जंगलों और पहाड़ों की खूब सैर की। इसी जमाने में उक्त जंगलों के बीहड़ बन, पहाड़ी खोहें, और प्राचीन इमारतों के अवशेष आदि दर्शनीय स्थान आपने बड़ी सावधानी से देखे।

कुछ कारणों से इन जंगलों का ठीका खत्रीजी को छोड़ना पड़ा और ये घर आ गये तथा वहीं पर रहने लगे। इसी समय इनको कुछ लिखने की धुन समाई और आपने चन्द्रकान्ता नामक उपन्यास लिखना आरंभ किया जिसका पहिला भाग काशी नेपाली खपड़े के हरिप्रकाश यन्त्रालय में बा० अमीरसिंह वर्मा द्वारा सन् १८८८ ई० में छापा गया।

इस पुस्तक में इन्होंने अपने गयाजी के युवावस्था के अनुभव और अपनी आँखों देखी जंगलों की बहार का वर्णन किया है।

जनता ने उन्मुक्त हृदय से चन्द्रकान्ता का स्वागत किया। लाखों व्यक्ति इसी पुस्तक की कृपा से हिन्दी के लेखक बन गये।

चन्द्रकान्ता और उसके बाद चन्द्रकान्ता सन्तति के ग्यारह भाग हरिप्रकाश यंत्रालय में छपे। इसके पीछे सन् १८६८ ई० के सितम्बर मास में आपने 'लहरी प्रेस' नाम से अपना निज का प्रेस खोल लिया, तब से वहीं इस उपन्यास के आगे के भाग तथा आपके अन्य उपन्यास छपे।

आपके भूतनाथ, नरेन्द्र मोहनी, कुसुम-कुमारी, बीरेन्द्रबीर या कटोरा भर खून, काजर की कोठरी और गुप्तगोदना नामक उपन्यास और भी हैं।

खत्रीजी की कल्पनाशक्ति जितनी अद्भुत थी वैसी ही अद्भुत आपकी स्मृति शक्ति भी थी। इतने बड़े बड़े उपन्यास लिखते हुए भी आपने जीवन भर न तो कहीं नोट रक्खे न आगे का खाका ही कभी खींचा। बस पृष्ठ पर पृष्ठ लिखते जाना और प्रेस में भेजते जाना यही आपका काम था। कई बार ऐसा हुआ है कि मित्रों के साथ गप-शप कर रहे या गंजीफा अथवा शतरंज खेल रहे हैं और प्रेस से आदमी

आया कि इतने पेज की कापी घट गई है तुरत भेजिये। बस कागज कलम उठाया और लिख कर भेज दिया, और इस पर भी कथा या खेल दोनों ही में कहीं व्यक्तिक्रम नहीं।

आपने अपने निज के खर्चे से सुदर्शन नाम का एक मासिक पत्र भी निकाला था जो अपने समय के हिन्दी के प्रसिद्ध मासिक-पत्रों में था। पण्डित माधवप्रसाद मिश्र इसके सम्पादक थे। सम्पादक की मृत्यु के साथ ही सुदर्शन का भी अदर्शन हो गया।

बा० देवकीनन्दन खत्री जी ने हिन्दी साहित्य के एक अंग की पूर्ति द्वारा हिन्दी भाषा का बहुत उपकार किया।

आपका देहान्त १ अगस्त सन् १६१३ ई० को हुआ।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता

उपन्यास

पहिला हिस्सा

पहिला बयान

शाम का वक्त है, कुछ कुछ सूरज दिखाई दे रहा है, सुनसान मैदान में एक पहाड़ी के नीचे दो शख्स बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं।

बीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कीस या बाईस वर्ष की होगी। यह नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का इकलौता लड़का है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान जीतसिंह का प्यारा लड़का और कुंअर बीरेन्द्रसिंह का दिली दोस्त, बड़ा चालाक, फुर्तीला, कमर में सिर्फ खञ्जर बाँधे, बगल में बटुआ लटकाये, हाथ में एक कमन्द लिए, बड़ी तेजी के साथ चारो तरफ देखता और इनसे बातें करता जाता है। इन दोनों के सामने एक घोड़ा कसा कसाया दुरुस्त पेड़ से बंधा हुआ है।

कुंअर बीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, "भाई तेजसिंह, देखो मुहब्बत भी क्या बुरी बला है जिसने इस दर्जे तक पहुँचा दिया। कई दफे तुम विजयगढ़ जाकर राजकुमारी चन्द्रकान्ता की चीठी मेरे पास लाये और मेरी चीठी उन तक पहुँचाई जिससे साफ मालूम होता है कि जितनी मुहब्बत मैं चन्द्रकान्ता से रखता हूँ उतनी ही चन्द्रकान्ता मुझसे रखती है, और हमारे राज्य से उसके राज्य के बीच सिर्फ पाँच ही कोस का फासला भी है, तिस पर भी हमलोगों के किये कुछ नहीं बन पड़ता। देखो इस खत में भी चन्द्रकान्ता ने यही लिखा है कि 'जिस तरह बने जल्द मिल जाओ'।"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "मैं हर तरह से आपको वहां ले जा सकता हूँ मगर

एक तो आजकल चन्द्रकान्ता के पिता महाराज जयसिंह ने महल के चारों तरफ सख्त पहरा बैठा रक्खा है, दूसरे उनके मन्त्री का लड़का क्रूरसिंह उस पर आशिक हो रहा है, ऊपर से उसने अपने दोनों ऐयारों *को जिनका नाम नाजिमअली और अहमदखां है इस बात की ताकीद कर दी है कि बराबर वे लोग महल की निगहबानी किया करें क्योंकि आपकी मुहब्बत का हाल क्रूरसिंह और उनके ऐयारों को बखूबी मालूम हो गया है। चाहे चन्द्रकान्ता क्रूरसिंह से बहुत ही नफरत करती है और राजा भी अपनी लड़की अपने मन्त्री के लड़के को नहीं दे सकता फिर भी उसे उम्मीद बंधी हुई है और आपकी लगावट बहुत बुरी मालूम होती है। अपने बाप के जरिये उसने महाराज जयसिंह के कान तक आपकी लगावट का हाल पहुँचा दिया है और इसी सबब से पहरे की यह सख्त तकीद हो गई है। आपको ले चलना अभी मुझे पसन्द नहीं जब तक कि मैं वहां जाकर फसादियों को गिरफ्तार न कर लूं।

"इस वक्त मैं फिर विजयगढ़ जाकर चन्द्रकान्ता और चपला से मुलाकात करता हूँ क्योंकि चपला ऐयारा और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है और चन्द्रकान्ता को जान से ज्यादा मानती है। सिवाय इस चपला के मेरा साथ देने वाला वहां कोई नहीं है। जब मैं अपने दुश्मनों की चालाकी और कार्रवाई देख कर लौटूं तब आपके चलने के बारे में राय दूँ। कहीं ऐसा न हो कि बिना समझे बूझे काम करके हमलोग वहां ही गिरफ्तार हो जायं।"

बीरेन्द्र०। जो मुनासिब समझो करो, मुझको तो सिर्फ अपनी ताकत का भरोसा है लेकिन तुमको अपनी ताकत और ऐयारी दोनों का।

तेजसिंह०। मुझे यह भी पता लगा है कि हाल ही में क्रूरसिंह के दोनों ऐयार नाजिम और अहमद यहां आकर पुनः हमारे महाराज का दर्शन कर गये हैं। न मालूम किस चालाकी में आये थे? अफसोस उस वक्त मैं यहां न था।

बीरेन्द्र०। मुश्किल तो यह है कि तुम क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों को फंसाया चाहते हो और वे लोग तुम्हारी गिरफ्तारी की फिक्र में हैं, परमेश्वर ही कुशल करे। खैर अब तुम जाओ और जिस तरह बने चन्द्रकान्ता से मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त करो।

तेजसिंह फौरन उठ खड़े हुए और बीरेन्द्रसिंह को वहीं छोड़ पैदल विजयगढ़ की तरफ रवाना हुए। बीरेन्द्रसिंह भी घोड़े को दरख्त से खोल उस पर सवार हुए और अपने किले की तरफ चल चले गये।

---

* ऐयार उसको कहते हैं जो हर एक फन जानता हो, शक्ल बदलना और दौड़ना उसका मुख्य काम है।

दूसरा बयान

विजयगढ़ में क्रूरसिंह* अपनी बैठक के अन्दर नाजिम और अहमद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बातें कर रहा है।

क्रूर०। देखो नाजिम, महाराज को तो यह ख्याल है कि मैं राजा होकर मन्त्री के लड़के को कैसे दामाद बनाऊँ, और चन्द्रकान्ता बीरेन्द्रसिंह को चाहती है, अब कहो कि मेरा काम कैसे निकले? अगर सोचा जाय कि चन्द्रकान्ता को लेकर भाग जाऊं, तो कहाँ जाऊं और कहाँ रह कर आराम करूं? फिर ले जाने के बाद मेरे बाप की महाराज क्या दुर्दशा करेंगे? इससे तो यही मुनासिब होगा कि पहले बीरेन्द्रसिंह और उसके ऐयार तेजसिंह को किसी तरह गिरफ्तार कर किसी ऐसी जगह ले जाकर खपा डाला जाय कि हजार वर्ष तक पता न लगे, और इसके बाद मौका पाकर महाराज को मारने की फिक्र की जाय फिर तो मैं झट गद्दी का मालिक बन जाऊंगा और तब अलबत्ते अपनी जिन्दगी में चन्द्रकान्ता से ऐश कर सकूंगा। मगर यह तो कहो कि महाराज के मारने के बाद मैं गद्दी का मालिक कैसे बनूंगा? लोग मुझे राजा कैसे बनाएंगे?

नाजिम०। हमारे राजा के यहाँ बनिस्बत काफिरों के मुसलमान ज्यादा हैं, उन सभों को आपकी मदद के लिए मैं राजी कर सकता हूँ और उन लोगों से कसम खिला सकता हूँ कि महाराज के बाद आपको राजा मानें, मगर शर्त यह है कि काम हो जाने पर आप भी हमारे मजहब मुसलमानी को कबूल करें?

क्रूरसिंह०। अगर ऐसा है तो तुम्हारी शर्त मैं दिलोजान से कबूल करता हूँ।

अहमद०। तो बस ठीक है, आप इस बात का एकरारनामा लिख कर मेरे हवाले करें, मैं सब मुसलमान भाइयों को दिखला कर उन्हें अपने साथ मिला लूंगा।

क्रूरसिंह ने काम हो जाने पर मुसलमानी मजहब अख्तियार करने का एकरारनामा लिख कर फौरन नाजिम और अहमद के हवाले किया, जिस पर अहमद ने क्रूरसिंह से कहा, "अब सब मुसलमानों को एक दिल कर लेना हम लोगों के जिम्मे है, इसके लिए आप कुछ न सोचिये, हाँ हम दोनों आदमियों के लिए भी एक एकरारनामा इस बात का हो जाना चाहिये कि आपके राजा होने पर हमीं दोनों वजीर मुकर्रर किये जायंगे, और तब हम लोगों की चालाकी का तमाशा देखिये कि बात की बात में जमाना कैसे उलट पुलट कर देते हैं!"

क्रूरसिंह ने झटपट इस बात का भी एकरारनामा लिख दिया जिससे वे दोनों बहुत ही खुश हुए। इसके बाद नाजिम ने कहा, "इस वक्त हम लोग चन्द्रकान्ता के

---

* इसकी उम्र २१ या २२ वर्ष की थी और [illegible]

हालचाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत अच्छा है, चन्द्रकान्ता जरूर बाग में गई होगी और अपनी सखी चपला से अपनी विरह कहानी कहती होगी, इसलिए हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि आजकल बीरेन्द्रसिंह और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है।"

यह कह कर दोनों ऐयार क्रूरसिंह से बिदा हुए।

तीसरा बयान

कुछ कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा बाग में टहल रही हैं। भीनी भीनी फूलों की महक धीमी हवा के साथ मिल कर तबीयत को खुश कर रही है। तरह तरह के फूल खिले हुए हैं। बाग के पश्चिम की तरफ वाले आम के घने पेड़ों की बहार और उसमें से बैठते हुए सूरज के किरणों की चमक एक अजीब ही मजा दे रही है। फूलों की क्यारियों की रविशों में अच्छी तरह छिड़काव किया हुआ है और फूलों के दरख्त भी फच्छी तरह पानी से धोए हुए हैं। कहीं गुलाब, कहीं जूही, कहीं बेला, कहीं मोतिए की क्यारियाँ अपना अपना मजा दे रही हैं। एक तरफ बाग से सटा हुआ ऊँचा महल और दूसरी तरफ सुन्दर सुन्दर बुर्जियां अपनी बहार दिखला रही हैं। चपला जो चालाकी के फन में बड़ी तेज और चन्द्रकान्ता की प्यारी सखी है अपने चंचल हावभाव के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिए चारों ओर घूमती और तारीफ करती हुई खुशबूदार फूलों को तोड़ तोड़ कर चन्द्रकान्ता के हाथ में दे रही है, मगर चन्द्रकान्ता को बीरेन्द्रसिंह की जुदाई में ये सब बातें कब अच्छी मालूम होती हैं, उसे तो दिल बहलाने के लिए उसकी सखियां जबर्दस्ती बाग में खींच लाई हैं।

चन्द्रकान्ता की सखी चम्पा तो गुच्छा बनाने के लिये फूलों को तोड़ती हुई मालती-लता के कुञ्ज की तरफ चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चपला धीरे धीरे टहलती हुई बीच के फौवारे के पास जा निकलीं और उसकी चक्करदार टूटियों से निकलते हुए जल का तमाशा देखने लगीं।

चपला०। न मालूम चम्पा किधर चली गई!

चन्द्रकान्ता०। कहीं इधर उधर घूमती होगी।

चपला०। दो घड़ी से ज्यादे हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।

चन्द्रकान्ता०। देखो वह आ रही है।

चपला०। इस वक्त तो इसकी चाल में फर्क मालूम होता है!

इतने में चम्पा ने आकर फूलों का एक गुच्छा चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और

कहा, "देखिये यह कैसा अच्छा गुच्छा बना लाई हूँ! अगर इस वक्त कुंवर बीरेन्द्रसिंह होते तो इसको देख मेरी कारीगरी की तारीफ करते और मुझको बहुत कुछ इनाम देते।"

बीरेन्द्रसिंह का नाम सुनते ही यकायक चन्द्रकान्ता का अजब हाल हो गया। भूली हुई बात फिर याद आ गई, कमल-मुख मुरझा गया, ऊँची ऊँची सांसें लेने लगी, आँखों से आंसू टपकने लगे। धीरे धीरे कहने लगी, "न मालूम विधाता ने मेरे भाग्य में क्या लिखा है? न मालूम मैंने उस जन्म में कौन ऐसे पाप किये हैं जिनके बदले यह दुःख भोगना पड़ा। देखो पिता को क्या धुन समाई है। कहते हैं कि चन्द्रकान्ता को कुंआरी ही रक्खूँगा। हाय, बीरेन्द्र के पिता ने शादी करने के लिए कैसी कैसी खुशामदें कीं मगर उस दुष्ट क्रूर के बाप कुपथसिंह ने उनको ऐसा कुछ अपने वश में कर रक्खा है कि कोई काम होने नहीं देता, और उधर कम्बख्त क्रूर मुझसे अपनी ही लसी लगाना चाहता है।"

यकायक चपला ने चन्द्रकान्ता का हाथ पकड़ कर धीरे से दबाया, मानो चुप रहने के लिए इशारा किया।

चपला के इशारे को समझ चन्द्रकान्ता चुप हो रही और चपला का हाथ पकड़ कर फिर बाग में टहलने लगी, मगर अपना रूमाल उस जगह जान बूझकर गिराती गई। थोड़ी दूर आगे बढ़ कर उसने चम्पा से कहा, "सखी, देखो तो फौवारे के पास कहीं मेरा रूमाल गिर पड़ा है।"

चम्पा रूमाल लेने फौवारे की तरफ चली गई, तब चन्द्रकान्ता ने चपला से पूछा, "सखी तैंने बोलते बोलते मुझे यकायक क्यों रोका?"

चपला ने कहा, "मेरी प्यारी सखी, मुझको चम्पा पर शुबहा हो गया है, उसकी बातों और चितवनों से मालूम होता है कि वह असली चम्पा नहीं है।"

इतने में चम्पा ने रूमाल लाकर चपला के हाथ में दिया। चपला ने चम्पा से पूछा, "सखी, कल रात को मैंने तुझसे जो कहा था सो तैंने किया?" चम्पा बोली, "नहीं मैं तो भूल गई!" तब चपला ने कहा, "भला वह बात तो याद है या वह भी भूल गई!" चम्पा बोली, "बात तो याद है।" तब फिर चपला ने कहा, "भला दोहरा के मुझसे कह तो सही, तब मैं जानूँ कि तुझे याद है!"

इस बात का जवाब न देकर चम्पा ने दूसरी बात छेड़ दी जिससे शक की जगह यकीन हो गया कि यह चम्पा नहीं है। आखिर चपला यह कह कर कि 'मैं तुझसे एक बात कहूँगी' चम्पा को एक किनारे ले गई और कुछ मामूली बातें करके बोली, "देख तो चम्पा मेरे कान से कुछ बदबू तो नहीं आती? क्योंकि कल से कान में दर्द है!"

नकली चम्पा चपला के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूँघने लगी। चपला चालाकी से बेहोशी की बुकनी कान में रख कर नकली चम्पा को सुँघा दिया जिसके सूँघते ही चम्पा बेहोश होकर गिर पड़ी।

चपला ने चन्द्रकान्ता को पुकार कर कहा, "आओ सखी अपनी चम्पा का हाल देखो।" चन्द्रकान्ता ने पास आकर चम्पा को बेहोश पड़ी हुई देख चपला से कहा, "सखी कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा खयाल धोखा ही निकले और पीछे चम्पा से शरमाना पड़े!" "नहीं ऐसा न होगा!" कह चपला चम्पा को पीठ पर लाद फौवारे के पास ले गई और चन्द्रकान्ता से बोली, "तुम फौवारे से चिल्लू भर भर पानी इसके मुँह पर डालो, मैं धोती हूँ।" चन्द्रकान्ता ने ऐसा ही किया और चपला खूब रगड़ रगड़ कर उसका मुँह धोने लगी। थोड़ी देर में चम्पा की सूरत बदल गई और साफ नाजिम की सूरत निकल आई। देखते ही चन्द्रकान्ता का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और वह बोली, "सखी इसने तो बड़ी बेअदबी की!"

"देखो तो अब मैं क्या करती हूँ!" कह कर चपला नाजिम को फिर पीठ पर लाद बाग के एक कोने में ले गई जहाँ बुर्ज के नीचे एक छोटा सा तहखाना था। उसके अन्दर बेहोश नाजिम को ले जाकर लिटा दिया और अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकालकर जलाई। एक रस्सी से नाजिम के पैर और दोनों हाथ पीठ की तरफ खूब कस कर बांधे, और डिबिया से लखलखा निकाल उसको सुंघाया जिससे नाजिम ने एक छींक मारी और होश में आकर अपने को कैद और बेबस देखा। चपला कोड़ा लेकर खड़ी हो गई और मारना शुरू किया।

"माफ करो, मुझसे बड़ा कसूर हुआ, अब मैं ऐसा कभी न करूँगा बल्कि इस काम का नाम भी न लूँगा!" इत्यादि कह नाजिम चिल्लाने और रोने लगा, मगर चपला कब सुनती थी? वह कोड़ा जमाए ही गई और बोली, "सब्र कर, अभी तो तेरे पीठ की खुजली भी न मिटी होगी। तू यहाँ क्यों आया था? क्या बाग की हवा अच्छी मालूम हुई थी? क्या बाग की सैर को जी चाहा था? क्या तू नहीं जानता था कि चपला भी यहाँ होगी? हरामजादे के बच्चे, बेईमान, अपने बाप के कहने से तैंने यह काम किया! देख मैं उसकी भी तबियत खुश कर देती हूँ!" यह कह कर फिर मारना शुरू किया, तब पूछा, "सच बता तू यहाँ कैसे आया और चम्पा कहाँ गई?"

मार के खौफ से नाजिम को असल हाल कहना ही पड़ा। वह बोला, "चम्पा को मैंने ही बेहोश किया था, बेहोशी की दवा छिड़क कर फूलों का गुच्छा उसके रास्ते में रख दिया जिसको सूँघ कर वह बेहोश हो गई, तब मैंने उसे मालती लता के कुञ्ज

में डाल दिया और उसकी सूरत बन उसके कपड़े पहिर तुम्हारी तरफ चला आया। लो मैंने सब हाल कह दिया, अब छोड़ दो!"

चपला ने कहा, "ठहर छोड़ती हूँ।" मगर फिर भी दस पाँच खूबसूरत कोड़े और जमा ही दिए यहाँ तक कि नाजिम बिलबिला उठा, तब चपला ने चन्द्रकान्ता से कहा, "सखी तुम इसकी निगहबानी करो, मैं चम्पा को ढूँढ़ लाती हूँ, कहीं यह पाजी झूठ न कहता हो!"

चम्पा को खोजती हुई चपला मालती-लता के पास पहुँची और बत्ती बाल कर ढूँढ़ने लगी। देखा कि सचमुच चम्पा एक झाड़ी में बेहोश पड़ी है और बदन पर उसके एक लत्ता भी नहीं है। लखलखा सुंघाकर होश में लाई और पूछा, "क्यों मिजाज कैसा है, खा न गई धोखा!"

चम्पा ने कहा, "मुझको क्या मालूम था कि इस समय यहाँ ऐयारी होगी? इस जगह फूलों का एक गुच्छा पड़ा था जिसको सूँघते ही मैं बेहोश हो गई, फिर न मालूम क्या हुआ। हाय, न जाने किसने मुझे बेहोश किया, मेरे कपड़े भी उतार लिये, बड़ी लागत के कपड़े थे!"

वहाँ पर नाजिम के कपड़े पड़े हुए थे जिनमें से दो एक लेकर चपला ने चम्पा का बदन ढांका और तब यह कह के कि 'मेरे साथ आ मैं उसे दिखलाऊँ जिसने तेरी ऐसी हालत की!' चम्पा को साथ ले उस जगह आई जहाँ चन्द्रकान्ता और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इशारा करके चपला ने चम्पा से कहा, "देख इसी ने तेरे साथ यह भलाई की थी!" चम्पा को नाजिम की सूरत देखते ही बड़ा गुस्सा आया और वह चपला से बोली, "बहिन, अगर इजाजत दो तो मैं भी दो चार कोड़े लगा कर अपना गुस्सा निकाल लूँ।"

चपला ने कहा, "हाँ हाँ, जितना जी चाहे इस मुए को जूतियाँ लगाओ!" बस फिर क्या था, चम्पा ने मनमानते कोड़े नाजिम को लगाये, यहाँ तक कि नाजिम घबड़ा उठा और जी में कहने लगा, "खुदा क्रूरसिंह को गारत करे जिसकी बदौलत मेरी यह हालत हुई!"

आखिरकार नाजिम को उसी तहखाने में कैद कर तीनों महल की तरफ रवाना हुई। यह छोटा सा बाग जिसमें ऊपर लिखी बातें हुईं, महल के संग सटा हुआ उसके पिछवाड़े की तरफ पड़ता था और खास कर चन्द्रकान्ता के टहलने और हवा खाने के लिए ही बनवाया गया था। इसके चारो तरफ मुसलमानों का पहरा होने के सबब

से ही अहमद और नाजिम को अपना काम करने का मौका मिल गया था।

चौथा बयान

तेजसिंह बीरेन्द्रसिंह से रुखसत होकर विजयगढ़ पहुँचे और चन्द्रकान्ता से मिलने की कोशिश करने लगे, मगर कोई तरकीब न बैठी क्योंकि पहरेवाले बड़ी होशियारी से पहरा दे रहे थे। आखिर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए? रात चाँदनी है, अगर अन्धेरी होती तो कमन्द लगाकर ही महल के ऊपर जाने की कोशिश की जाती।

आखिर तेजसिंह एकान्त में गये और वहाँ अपनी सूरत एक चोबदार की सी बना महल की ड्योढ़ी पर पहुँचे। देखा कि बहुत से चोबदार और प्यादे बैठे पहरा दे रहे हैं। एक चोबदार से बोले, "यार, हम भी महाराज के नौकर हैं, आज चार महीने से महाराजने हमको अपनी अर्दली में नौकर रक्खा है, इस वक्त छुट्टी थी, चाँदनी रात का मजा देखते टहलते इस तरफ आ निकले, तुम लोगों को तम्बाकू पीते देख जी में आया कि चलो दो फूँक हम भी लगा लें, अफियून खाने वालों को तम्बाकू की महक जैसी मालूम होती है आप लोग भी जानते ही होंगे!"

"हाँ हाँ, आइये बैठिये, तम्बाकू पीजिए!" कहकर चोबदार और प्यादों ने हुक्का तेजसिंह के आगे रक्खा। तेजसिंह ने कहा, "मैं हिन्दू हूँ, हुक्का तो नहीं पी सकता हाँ हाथ से जरूर पी लूँगा।" यह कह चिलम उतार ली और पीने लगे।

दो फूँक भी तम्बाकू के नहीं पीए थे कि खांसना शुरू किया, इतना खांसा कि थोड़ा सा पानी भी मुँह से निकाल दिया और तब कहा, "मियां, तुम लोग अजब कड़वा तम्बाकू पीते हो? मैं तो हमेशे सरकारी तम्बाकू पीता हूँ। महाराज के हुक्काबर्दार से दोस्ती हो गई है, वह बराबर महाराज के पीने वाले तम्बाकू में से मुझको दिया करता है, अब ऐसी आदत पड़ गयी है कि सिवाय उस तम्बाकू के और कोई तम्बाकू अच्छा ही नहीं लगता!"

इतना कह चोबदार बने हुए तेजसिंह ने अपने बटुए में से एक चिलम तम्बाकू निकाल कर दिया और कहा, "लो तुम लोग भी पी कर देख लो कि कैसा तम्बाकू है।"

भला चोबदारों ने महाराज के पीने का तम्बाकू कभी काहे को पीया होगा, पीना क्या सपने में भी न देखा होगा? झट से हाथ फैला दिया और कहा, "लाओ भाई, भला तुम्हारी बदौलत हम भी सरकारी तम्बाकू तो पी लें, तुम बड़े किस्मतवर हो कि महाराज के साथ रहते हो, तुम तो खूब चैन करते होगे!" यह कह नकली चोबदार (तेजसिंह) के हाथ से तम्बाकू ले लिया और खूब डबल जमाकर तेजसिंह

के सामने लाये। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग सुलगाओ, फिर मैं भी ले लूँगा।"

अब हुक्का गुड़गुड़ाने लगा और साथ ही गप्पें भी उड़ने लगीं।

थोड़ी ही देर में सब चोबदार और प्यादों का सर घूमने लगा, यहाँ तक कि झुकते झुकते सब औंधे होकर गिर पड़े और बेहोश हो गये।

अब क्या था, बड़ी आसानी से तेजसिंह फाटक के अन्दर घुस गए और नजर बाग में पहुँचे। देखा कि हाथ में रोशनी लिए सामने से एक लौंडी चली आ रही है। तेजसिंह ने फुर्ती से पास जाकर उसके गले में कमन्द डाली और ऐसा झटका दिया कि वह चूँ तक न कर सकी और जमीन पर गिर पड़ी। तुरत उसे बेहोशी की बुकनी सुंघाई और जब वह बेहोश हो गई उसे वहाँ से उठा कर किनारे ले गये। बटुए में से सामान निकाल मोमबत्ती जलाई और सामने आईना रख अपनी सूरत उसी के जैसी बनाई, इसके बाद उसको वहीं छोड़ उसी का कपड़ा पहिन महल की तरफ रवाना हुए और वहाँ पहुँचे जहाँ चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा दस पाँच लौंडियों के साथ बैठी बातें कर रही थीं। लौंडी की सूरत बने हुए तेजसिंह भी एक किनारे जाकर बैठ गये।

तेजसिंह को देख चपला बोली, "क्यों केतकी, जिस काम के लिए मैंने तुझको भेजा था क्या वह काम तू कर आई जो चुपचाप आकर बैठ रही है?"

चपला की बात सुन तेजसिंह को मालूम हो गया कि जिस लौंडी को मैंने बेहोश किया है या जिसकी सूरत बन कर आया हूँ उसका नाम केतकी है।

नकली केतकी०। हाँ काम करने तो गई ही थी मगर रास्ते में एक नया तमाशा देख तुमसे कुछ कहने के लिये लौट आई हूँ।

चपला०। ऐसा! अच्छा तैंने क्या देखा कह?

नकली के०। सभों को हटा दो तो तुम्हारे और राजकुमारी के सामने बात कह सुनाऊँ।

सब लौंडियां हटा दी गईं और केवल चन्द्रकान्ता चपला और चम्पा रह गईं, तब केतकी ने हँस कर कहा, "कुछ इनाम दो तो खुशखबरी सुनाऊँ।"

चन्द्रकान्ता ने समझा कि शायद यह कुछ बीरेन्द्रसिंह की खबर लाई है, मगर फिर यह भी सोचा कि मैंने तो आज तक कभी बीरेन्द्रसिंह का नाम भी इसके सामने नहीं लिया तब यह क्या मामला है? कौन सी खुशखबरी है जिसके सुनने के लिए यह पहिले ही से इनाम मांगती है? आखिर चन्द्रकान्ता ने केतकी से कहा, "हां हां इनाम दूँगी, तू कह तो सही क्या खुशखबरी लाई है?"

केतकी ने कहा, "पहिले दे दो तो कहूँ नहीं तो जाती हूँ।" यह कह उठ कर खड़ी हो गई।

केतकी के ये नखरे देख चपला से न रहा गया और वह बोल उठी, "क्यों रे केतकी, आज तुझको क्या हो गया है कि ऐसी बढ़ बढ़ के बातें कर रही है। लगाऊँ दो लात उठ के!"

केतकी ने जवाब दिया, "क्या मैं तुझसे कमजोर हूँ जो तू लात लगावेगी और मैं छोड़ दूँगी।"

अब तो चपला से न रहा गया और केतकी का झोंटा पकड़ने के लिए दौड़ी यहाँ तक कि दोनों आपुस में गुथ गईं। इत्तिफाक से चपला का हाथ नकली केतकी की छाती पर जा पड़ा जहाँ की सफाई देख वह घबरा उठी और झट अलग हो गई।

नकली केतकी०। (हँस कर) क्यों भाग क्यों गईं, आओ लड़ो!

चपला कमर से कटार निकाल सामने हुई और बोली, "ओ ऐयार, सच बता तू कौन है नहीं तो अभी जान ले डालती हूँ!"

इसका जवाब नकली केतकी ने चपला को कुछ न दिया और बीरेन्द्रसिंह की चीठी निकाल चन्द्रकान्ता के सामने रख दी। चपला की नजर भी इस चीठी पर पड़ी और गौर से देखने लगी। बीरेन्द्रसिंह के हाथ की लिखावट देख समझ गयी कि ये तेजसिंह हैं क्योंकि सिवाय तेजसिंह के और किसी के हाथ बीरेन्द्रसिंह कभी चीठी नहीं भेजेंगे। यही सोच समझ चपला शर्मा गई और गर्दन नीची कर चुप हो रही मगर जी में तेजसिंह की सफाई और चालाकी की तारीफ करने लगी बल्कि सच तो यह है कि तेजसिंह की मुहब्बत ने उसके दिल में जगह पकड़ ली।

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुहब्बत से बीरेन्द्रसिंह का खत पढ़ा और तब तेजसिंह से बातचीत करने लगी—

चन्द्र०। क्यों तेजसिंह, उनका मिजाज तो अच्छा है?

तेज०। मिजाज क्या खाक अच्छा होगा? खाना पीना सब छूट गया, रोते रोते आँखें सूज आईं, दिन रात तुम्हारा ध्यान है, बिना तुम्हारे मिले उनको कब आराम है। हजार समझाता हूँ मगर कौन सुनता है, अभी उसी दिन तुम्हारी चीठी लेकर मैं गया था, आज उनकी हालत देख फिर यहां आना पड़ा। कहते थे कि मैं खुद चलूँगा, किसी तरह समझा बुझा कर यहाँ आने से रोका और कहा कि आज मुझको जाने दो, मैं जाकर वहाँ बन्दोबस्त कर आऊँ तब तुमको ले चलूँगा जिसमें किसी तरह का नुकसान न हो। खैर किसी तरह समझ गए और तुम्हारी चीठी का जवाब देकर मुझे इधर बिदा किया।

चन्द्र०। अफसोस तुम उनको अपने साथ न लाए, भला मैं उनका दर्शन तो कर लेती! देखो यहाँ क्रूरसिंह के दोनों ऐयारों ने इतना ऊधम मचा रक्खा है कि कुछ कहा नहीं जाता। पिताजी को मैं कितना रोकती और समझाती हूँ कि क्रूरसिंह के दोनों ऐयार मेरे दुश्मन हैं मगर महाराज कुछ नहीं सुनते, क्योंकि क्रूरसिंह ने उनको अपने वश में कर रक्खा है। मेरी और कुमार की मुलाकात का हाल बहुत कुछ बढ़ा कर महाराज को न मालूम किस तरह समझा दिया है कि महाराज उसे सच्चों का बादशाह समझ गये हैं। वह हरदम महाराज के कान भरा करता है। अब वे मेरी कुछ भी नहीं सुनते, हाँ आज बहुत कुछ कहने का मौका मिला है क्योंकि आज मेरी प्यारी सखी चपला ने नाजिम को इस पिछवाड़े वाले बाग में गिरफ्तार किया है, कल महाराज के सामने उसको ले जाकर तब कहूँगी कि आप अपने क्रूरसिंह की सचाई को देखिए, अगर मेरे पहरे पर मुकर्रर किया ही था तो बाग के अन्दर आने की इजाजत इसे किसने दी थी?

यह कह कर चन्द्रकान्ता ने नाजिम के गिरफ्तार होने और बाग के तहखाने में कैद करने का बिल्कुल हाल तेजसिंह से कह सुनाया।

तेजसिंह चपला की चालाकी सुन कर हैरान हो गए और दिल में उसको प्यार करने लगे पर कुछ सोचने के बाद बोले, "चपला ने चालाकी तो खूब की मगर धोखा खा गई।"

यह सुन चपला हैरान हो गई कि या राम मैंने क्या धोखा खाया, पर कुछ समझ में नहीं आया। आखिर न रहा गया, तेजसिंह से पूछा, "जल्दी बताओ मैंने क्या धोखा खाया?" तेजसिंह ने कहा, "क्या तुम इस बात को नहीं जानती थीं कि नाजिम बाग में पहुँचा तो अहमद भी जरूर आया होगा? फिर बाग ही में नाजिम को क्यों छोड़ दिया? तुमको मुनासिब था कि जब उसको गिरफ्तार ही किया था तो महल में लाकर कैद करतीं या उसी वक्त महाराज के पास भेजवा देतीं, अब जरूर अहमद नाजिम को छुड़ा ले गया होगा।"

इतनी बात सुनते ही चपला के होश उड़ गये और बहुत शरमिन्दा होकर बोली, "सच है, बड़ी भारी गलती हुई, इसका किसी ने ख्याल नहीं किया!"

तेजसिंह०। और कोई क्यों ख्याल करता! तुम तो चालाक बनती हो, ऐयार कहलाती हो, इसका खयाल तुमको होना चाहिए कि दूसरों को! खैर जाके देखो भी तो है या नहीं?